शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 04 अंक– 13 जनवरी - मार्च - 2026 Impact factor– 4.5

झारखंड में स्थानीय समाचार पत्रों की भूमिका और राष्ट्रवादी चेतना का आर्थिक विकास (1900–1947)

डॉ जीतेंद्र कुमार & डॉ राजभानु पटेल
पोस्ट ग्रेजुएट टीचर (BPSC) अर्थशास्त्र+2
उच्च विद्यालय गेरुआ पुरसंडा हलसी लखीसराय बिहार 811311

डॉ राजभानु पटेल
असिस्टेंट प्रोफेसर - अर्थशास्त्र विभाग
गुरु घासीदास(केंद्रीय विश्वविद्यालय) बिलासपुर छत्तीसगढ़

प्रस्तावना-भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक संघर्ष तक सीमित नहीं था ,बल्कि यह सामाजिक ,सांस्कृतिक और वैचारिक जागरण का भी व्यापक आंदोलन था। इस जागरण में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से स्थानीय समाचार पत्रों ने जनता तक राष्ट्रीय विचारधारा पहुँचाने ,ब्रिटिश शासन की नीतियों का विरोध करने तथा जनसामान्य में स्वतंत्रता के प्रति चेतना उत्पन्न करने का कार्य किया। झारखंड ,जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक प्रमुख केंद्र रहा ,वहाँ के स्थानीय समाचार पत्रों ने राष्ट्रवादी भावना को मजबूत करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से लेकर 1947 तक झारखंड में अनेक समाचार पत्र प्रकाशित हुए, जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को जन-आंदोलन बनाने में सहायता की। इन समाचार पत्रों ने किसानों, विद्यार्थियों, मजदूरों तथा ग्रामीण जनता के बीच राजनीतिक जागरूकता फैलाने का कार्य किया। उस समय 'आर्यावर्त', 'सर्चलाइट', 'देश', 'झारखंड बन्धु' आदि पत्र राष्ट्रीय चेतना के वाहक बने। इन पत्रों ने अंग्रेज़ी शासन की दमनकारी नीतियों की आलोचना करते हुए स्वदेशी, असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा भारत छोड़ो आंदोलनों को व्यापक जनसमर्थन दिलाने में सहायता की।

उद्देश्य

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य 1900 से 1947 के मध्य झारखंड में स्थानीय समाचार पत्रों की भूमिका का अध्ययन करना तथा यह विश्लेषण करना है कि इन समाचार पत्रों ने राष्ट्रवादी चेतना के विकास में किस प्रकार योगदान दिया।

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

झारखंड में स्थानीय समाचार पत्रों के उद्भव एवं विकास का अध्ययन करना।

प्रमुख समाचार पत्रों एवं संपादकों की राष्ट्रवादी भूमिका का विश्लेषण करना।

स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों में स्थानीय प्रेस के योगदान का अध्ययन करना।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक झारखंड की सामाजिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में झारखंड सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। यह वह समय था जब भारत में राष्ट्रीय आंदोलन धीरे-धीरे व्यापक स्वरूप ग्रहण कर रहा था और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असंतोष बढ़ता जा रहा था। झारखंड, जो लंबे समय तक बंगाल प्रेसीडेंसी का हिस्सा रहा, औपनिवेशिक नीतियों के कारण आर्थिक शोषण, सामाजिक असमानता और प्रशासनिक उपेक्षा का शिकार था। इस काल में झारखंड का समाज मुख्यतः कृषि आधारित था। किसानों पर अत्यधिक लगान, जमींदारी प्रथा तथा अंग्रेज़ी प्रशासन की दमनकारी नीतियों ने ग्रामीण जनता को आर्थिक संकट में डाल दिया था। दूसरी ओर शिक्षा के प्रसार, सामाजिक सुधार आंदोलनों तथा समाचार पत्रों के उदय ने जनता में राजनीतिक चेतना को विकसित करना प्रारम्भ किया। इसी वातावरण में राष्ट्रवादी विचारधारा ने झारखंड में अपनी जड़ें मजबूत कीं। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में झारखंड के राजनीतिक जीवन में नए नेतृत्व का उदय हुआ। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह, श्रीकृष्ण सिंह तथा मौलाना मजहरुल हक जैसे नेताओं ने जनता को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का कार्य किया। इन नेताओं के प्रयासों और स्थानीय समाचार पत्रों के सहयोग से झारखंड में राष्ट्रीय चेतना का विस्तार हुआ तथा स्वतंत्रता आंदोलन को जन-आधारित स्वरूप प्राप्त हुआ।

ब्रिटिश शासन के अधीन झारखंड आर्थिक और प्रशासनिक दृष्टि से उपेक्षित क्षेत्र माना जाता था। अंग्रेज़ों की औपनिवेशिक नीतियों का मुख्य उद्देश्य भारतीय संसाधनों का दोहन करना था। झारखंड में जमींदारी प्रथा के माध्यम से किसानों का शोषण किया जाता था। अत्यधिक कर, लगान और बिचौलियों की व्यवस्था ने किसानों की स्थिति को अत्यंत दयनीय बना दिया था। नील की खेती तथा अन्य नकदी फसलों के लिए किसानों पर दबाव डाला जाता था। विशेष रूप से चंपारण क्षेत्र में नीलहे अंग्रेज़ किसानों पर अत्याचार करते थे। किसानों को उनकी इच्छा के विरुद्ध नील की खेती करने के लिए बाध्य किया जाता था। इससे ग्रामीण समाज में असंतोष बढ़ा और बाद में यही असंतोष चंपारण सत्याग्रह जैसे आंदोलन का आधार बना। औपनिवेशिक शासन ने झारखंड में शिक्षा, उद्योग और संचार के विकास पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया। प्रशासनिक स्तर पर भी झारखंड बंगाल के अधीन होने के कारण उपेक्षित रहा। 1912 में झारखंड एवं उड़ीसा को अलग प्रांत बनाए जाने के बाद क्षेत्रीय पहचान और राजनीतिक जागरूकता को नई दिशा मिली। इसके पश्चात झारखंड में राष्ट्रवादी गतिविधियों का विस्तार अधिक तीव्रता से हुआ।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में झारखंड में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। पश्चिमी शिक्षा के प्रसार, सामाजिक सुधार आंदोलनों तथा नए विचारों के प्रभाव से समाज में जागरूकता बढ़ने लगी। शिक्षा के माध्यम से लोगों में राजनीतिक चेतना और सामाजिक सुधार की भावना विकसित हुई। पटना कॉलेज, झारखंड नेशनल कॉलेज तथा अन्य शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना ने शिक्षित मध्यम वर्ग के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह शिक्षित वर्ग आगे चलकर राष्ट्रवादी आंदोलन का प्रमुख आधार बना। विद्यार्थियों और शिक्षकों ने राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी की तथा स्थानीय समाचार पत्रों के माध्यम से जनता को जागरूक किया। सामाजिक सुधार आंदोलनों ने भी झारखंड के समाज को प्रभावित किया। जातिगत भेदभाव, बाल विवाह, पर्दा प्रथा तथा अशिक्षा जैसी समस्याओं के विरुद्ध जागरूकता बढ़ने लगी। आर्य समाज, ब्रह्म समाज तथा अन्य सुधारवादी संगठनों ने सामाजिक परिवर्तन को गति प्रदान की। महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक भागीदारी पर भी बल दिया जाने लगा। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने इन सामाजिक परिवर्तनों को जनता तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने शिक्षा, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकता जैसे विचारों का प्रचार किया, जिससे समाज में नवचेतना का विकास हुआ।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियों तथा बंग-भंग आंदोलन का प्रभाव झारखंड में भी दिखाई देने लगा। स्वदेशी आंदोलन ने झारखंड के शिक्षित वर्ग और युवाओं में राष्ट्रीय भावना को प्रबल किया। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का प्रचार समाचार पत्रों और सार्वजनिक सभाओं के माध्यम से किया गया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में चंपारण सत्याग्रह (1917) झारखंड के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना सिद्ध हुआ। इस आंदोलन ने किसानों को ब्रिटिश शोषण के विरुद्ध संगठित किया तथा राष्ट्रीय आंदोलन को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाया। चंपारण आंदोलन के कारण झारखंड राष्ट्रीय राजनीति का प्रमुख केंद्र बन गया। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में झारखंड की जनता ने सक्रिय भागीदारी की। विद्यार्थियों, किसानों, मजदूरों तथा महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेकर अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध संघर्ष किया। इन आंदोलनों के दौरान स्थानीय समाचार पत्रों ने जनता में राष्ट्रीय भावना को मजबूत करने का कार्य किया। राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव से झारखंड में राजनीतिक संगठन मजबूत हुए और जनता में स्वतंत्रता के प्रति विश्वास बढ़ा। राष्ट्रवादी नेताओं के भाषण, लेख और समाचार पत्रों में प्रकाशित विचार जनता के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक झारखंड में जन-जागरण की प्रक्रिया कई सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारणों से विकसित हुई। अंग्रेज़ी शासन की दमनकारी नीतियों, आर्थिक शोषण तथा सामाजिक असमानता ने जनता में असंतोष उत्पन्न किया। दूसरी ओर शिक्षा, समाचार पत्रों और राष्ट्रीय आंदोलनों ने लोगों को संगठित और जागरूक बनाने का कार्य किया। स्थानीय समाचार पत्रों ने ग्रामीण एवं शहरी समाज के बीच संवाद स्थापित किया। इन पत्रों के माध्यम से जनता को राष्ट्रीय घटनाओं, आंदोलनों और नेताओं की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती थी। समाचार पत्रों ने ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना करते हुए जनता में स्वतंत्रता और स्वाभिमान की भावना को विकसित किया। सार्वजनिक सभाओं, छात्र आंदोलनों, किसान संगठनों और सामाजिक सुधार आंदोलनों ने भी जन-जागरण को गति प्रदान की। झारखंड विद्यापीठ जैसे संस्थानों की स्थापना ने राष्ट्रीय शिक्षा और स्वदेशी विचारधारा को बढ़ावा दिया। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक झारखंड में सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा का प्रसार, राष्ट्रीय आंदोलन और समाचार पत्रों की सक्रियता ने मिलकर जन-जागरण की व्यापक प्रक्रिया को जन्म दिया। यही जागरूकता आगे चलकर राष्ट्रवादी चेतना के विकास और स्वतंत्रता आंदोलन में झारखंड की सक्रिय भागीदारी का आधार बनी।

झारखंड में स्थानीय समाचार पत्रों का उद्भव एवं विकास

झारखंड में स्थानीय समाचार पत्रों का उद्भव उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रारम्भ हुआ, किन्तु बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इनका व्यापक विकास देखने को मिला। यह वह समय था जब शिक्षा का प्रसार, राष्ट्रीय आंदोलन की तीव्रता तथा मुद्रण तकनीक के विकास ने पत्रकारिता को नई दिशा प्रदान की। स्थानीय समाचार पत्र केवल समाचार देने का माध्यम नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक सुधार, राजनीतिक जागरूकता और राष्ट्रवादी चेतना के प्रचार-प्रसार के महत्वपूर्ण साधन बन गए। झारखंड के समाचार पत्रों ने जनता और राष्ट्रीय नेताओं के बीच संवाद स्थापित किया। उन्होंने ग्रामीण और शहरी समाज की समस्याओं को सामने लाते हुए ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना की। इन पत्रों ने राष्ट्रीय आंदोलन के कार्यक्रमों, सभाओं, आंदोलनों और नेताओं के विचारों को जनसाधारण तक पहुँचाने का कार्य किया। परिणामस्वरूप झारखंड में राष्ट्रवादी भावना का विस्तार हुआ और स्वतंत्रता आंदोलन को जनसमर्थन प्राप्त हुआ। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में झारखंड में हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी तीनों भाषाओं में समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे। प्रत्येक भाषा के समाचार पत्रों ने अपने-अपने पाठक वर्ग के बीच राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्थानीय पत्रकारों और संपादकों ने सीमित संसाधनों के बावजूद राष्ट्रवादी पत्रकारिता को मजबूत आधार प्रदान किया।

स्थानीय समाचार पत्र और राष्ट्रवादी चेतना का विकास-

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्थानीय समाचार पत्र राष्ट्रवादी चेतना के विकास के सबसे प्रभावशाली माध्यमों में से एक थे। झारखंड में प्रकाशित समाचार पत्रों ने जनता को राष्ट्रीय आंदोलन की विचारधारा से जोड़ने, ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना करने तथा स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन समाचार पत्रों ने केवल राजनीतिक घटनाओं की जानकारी ही नहीं दी, बल्कि जनता में स्वाभिमान, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकता की भावना को भी विकसित किया। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही झारखंड के स्थानीय समाचार पत्र राष्ट्रीय आंदोलन के समर्थक बन गए थे। उन्होंने किसानों, विद्यार्थियों, मजदूरों तथा ग्रामीण जनता तक राष्ट्रीय विचारधारा पहुँचाने का कार्य किया। समाचार पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय नेताओं के भाषण, आंदोलन संबंधी सूचनाएँ और ब्रिटिश शासन के अत्याचारों का विवरण जनसाधारण तक पहुँचता था। परिणामस्वरूप जनता में राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ और स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ। स्थानीय प्रेस ने विभिन्न राष्ट्रीय आंदोलनों—स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन—में सक्रिय भूमिका निभाई। इन आंदोलनों के दौरान समाचार पत्रों ने जनता को संगठित करने, आंदोलन के उद्देश्यों को स्पष्ट करने तथा ब्रिटिश विरोधी जनमत तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया।1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में प्रारम्भ हुआ स्वदेशी आंदोलन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का एक महत्वपूर्ण चरण था। इसका प्रभाव झारखंड में भी व्यापक रूप से दिखाई पड़ा। स्थानीय समाचार पत्रों ने स्वदेशी आंदोलन के विचारों को जनता तक पहुँचाने और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को प्रोत्साहित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। हिंदी और उर्दू समाचार पत्रों ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग, राष्ट्रीय शिक्षा तथा आत्मनिर्भरता पर बल दिया। समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों, कविताओं और संपादकीयों के माध्यम से जनता को यह समझाया गया कि विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार राष्ट्रीय सम्मान और आर्थिक स्वतंत्रता के लिए आवश्यक है। स्थानीय प्रेस ने ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीतियों की आलोचना करते हुए भारतीय उद्योगों और कुटीर उत्पादन को बढ़ावा देने की अपील की। समाचार पत्रों में स्वदेशी मेलों, सभाओं और आंदोलनों की विस्तृत जानकारी प्रकाशित की जाती थी, जिससे जनता में राष्ट्रीय भावना का प्रसार हुआ। इस आंदोलन के दौरान समाचार पत्र केवल सूचना देने का माध्यम नहीं रहे, बल्कि वे राष्ट्रीय चेतना के प्रेरक बन गए। उन्होंने युवाओं, विद्यार्थियों और व्यापारियों को आंदोलन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चंपारण सत्याग्रह, किसान आंदोलनों तथा भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ग्रामीण जनता की सक्रिय भागीदारी में स्थानीय प्रेस का महत्वपूर्ण योगदान रहा। समाचार पत्रों ने ग्रामीण समाज में स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की भावना को विकसित किया। इस प्रकार झारखंड के स्थानीय समाचार पत्रों ने राष्ट्रवादी चेतना को केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे ग्रामीण समाज तक पहुँचाकर स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जन-आधारित स्वरूप प्रदान किया।

प्रमुख राष्ट्रवादी समाचार पत्रों का विश्लेषण

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान झारखंड के राष्ट्रवादी समाचार पत्रों ने जनता में राजनीतिक जागरूकता और राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये समाचार पत्र केवल सूचना के माध्यम नहीं थे, बल्कि वे स्वतंत्रता आंदोलन के वैचारिक और सामाजिक आधार को मजबूत करने वाले सशक्त उपकरण थे। झारखंड के विभिन्न समाचार पत्रों ने ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों की आलोचना करते हुए राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन दिलाने का प्रयास किया। इन समाचार पत्रों के माध्यम से जनता को राष्ट्रीय नेताओं के विचारों, आंदोलनों और राजनीतिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती थी। साथ ही, इन पत्रों ने सामाजिक सुधार, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा और आत्मनिर्भरता जैसे विषयों को भी प्रमुखता से उठाया। सीमित संसाधनों और सरकारी दमन के बावजूद झारखंड के पत्रकारों और संपादकों ने राष्ट्रवादी पत्रकारिता को निरंतर आगे बढ़ाया। 'आर्यावर्त', 'सर्चलाइट', 'देश' तथा अन्य क्षेत्रीय समाचार पत्रों ने झारखंड में राष्ट्रवादी चेतना के विकास में विशेष योगदान दिया। इन समाचार पत्रों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि प्रेस किस प्रकार स्वतंत्रता आंदोलन का सक्रिय सहभागी बन गया था।

'आर्यावर्त' झारखंड का एक महत्वपूर्ण हिंदी समाचार पत्र था, जिसने राष्ट्रवादी आंदोलन को जनसाधारण तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह समाचार पत्र हिंदी भाषी जनता के बीच अत्यंत लोकप्रिय था और राष्ट्रीय विचारधारा के प्रचार-प्रसार का प्रमुख माध्यम बन गया था। 'आर्यावर्त' ने ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों, आर्थिक शोषण और प्रशासनिक अन्याय की खुलकर आलोचना की। इसके संपादकीय लेखों में स्वदेशी, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के विचारों को प्रमुखता दी जाती थी। यह समाचार पत्र किसानों, विद्यार्थियों और मध्यम वर्ग को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का प्रभावशाली माध्यम बना। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 'आर्यावर्त' ने आंदोलन संबंधी समाचारों और विचारों को प्रमुखता से प्रकाशित किया। इस पत्र ने जनता को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध शांतिपूर्ण संघर्ष के लिए प्रेरित किया। सरकारी प्रतिबंधों और आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद 'आर्यावर्त' ने अपनी राष्ट्रवादी नीति को बनाए रखा। इस प्रकार यह समाचार पत्र झारखंड में राष्ट्रीय चेतना के विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ सिद्ध हुआ।

औपनिवेशिक दमन एवं प्रेस पर नियंत्रण-

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ब्रिटिश सरकार ने समाचार पत्रों और पत्रकारिता को अपने शासन के लिए एक बड़ी चुनौती के रूप में देखा। झारखंड सहित पूरे भारत में स्थानीय समाचार पत्र राष्ट्रवादी चेतना के प्रचार-प्रसार का प्रमुख माध्यम बन चुके थे। इन समाचार पत्रों के माध्यम से जनता को ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों, आर्थिक झारखंड के स्वतंत्रता आंदोलन में स्थानीय प्रेस का प्रभाव भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान झारखंड के स्थानीय समाचार पत्रों ने जनमत निर्माण, राजनीतिक जागरूकता

और राष्ट्रीय चेतना के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्थानीय प्रेस केवल समाचारों का माध्यम नहीं था, बल्कि वह स्वतंत्रता संघर्ष का सक्रिय सहभागी बन चुका था। समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय नेताओं के विचारों, शोषण और राजनीतिक अन्याय की जानकारी मिल रही थी। परिणामस्वरूप जनता में असंतोष और स्वतंत्रता की भावना तीव्र होती जा रही थी। ब्रिटिश सरकार ने इस बढ़ती राष्ट्रवादी चेतना को नियंत्रित करने के लिए प्रेस पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगाए। प्रेस एक्ट, सेंसरशिप, आर्थिक दमन, संपादकों की गिरफ्तारी तथा मुकदमों के माध्यम से समाचार पत्रों की स्वतंत्रता को सीमित करने का प्रयास किया गया। इसके बावजूद झारखंड के स्थानीय समाचार पत्रों और पत्रकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन जारी रखा और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। औपनिवेशिक शासन और प्रेस के बीच यह संघर्ष केवल राजनीतिक अधिकारों का प्रश्न नहीं था, बल्कि यह विचारों की स्वतंत्रता और जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा का भी संघर्ष था। झारखंड की राष्ट्रवादी पत्रकारिता ने इस चुनौतीपूर्ण समय में साहस, त्याग और राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का परिचय दिया।

ब्रिटिश सरकार ने भारतीय प्रेस की बढ़ती प्रभावशीलता को नियंत्रित करने के लिए अनेक कठोर कानून बनाए। इन कानूनों का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रवादी समाचार पत्रों की गतिविधियों को सीमित करना और ब्रिटिश विरोधी विचारों के प्रसार को रोकना था। वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878) भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों को नियंत्रित करने के लिए लागू किया गया था। यद्यपि बाद में इसे समाप्त कर दिया गया, फिर भी औपनिवेशिक सरकार ने अन्य कानूनों के माध्यम से प्रेस पर नियंत्रण बनाए रखा। बीसवीं शताब्दी में प्रेस एक्ट, सीडिशन लॉ (देशद्रोह कानून) तथा आपातकालीन प्रेस कानूनों का उपयोग राष्ट्रवादी पत्रकारिता को दबाने के लिए किया गया। समाचार पत्रों को किसी भी प्रकार की ब्रिटिश विरोधी सामग्री प्रकाशित करने पर चेतावनी दी जाती थी। कई बार लेखों, संपादकीयों और राजनीतिक समाचारों को सेंसर कर दिया जाता था। प्रेस पर सरकारी निगरानी रखी जाती थी और प्रशासनिक अधिकारियों को यह अधिकार था कि वे किसी भी समाचार पत्र के प्रकाशन को रोक सकें। झारखंड के राष्ट्रवादी समाचार पत्रों ने इन प्रतिबंधों के बावजूद राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित समाचारों और विचारों को प्रकाशित करना जारी रखा। उन्होंने सेंसरशिप का विरोध करते हुए जनता के सामने सत्य प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

आंदोलनों और ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों को जनता तक पहुँचाकर समाज के विभिन्न वर्गों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। झारखंड में राष्ट्रवादी समाचार पत्रों का प्रभाव विशेष रूप से युवाओं, विद्यार्थियों, किसानों, मजदूरों और महिलाओं पर देखा गया। इन पत्रों ने जनता को राष्ट्रीय आंदोलन की विचारधारा से परिचित कराया और उन्हें स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। स्थानीय प्रेस ने सामाजिक और राजनीतिक चेतना का विस्तार करते हुए राष्ट्रीय एकता और जनसंपर्क को भी मजबूत किया। समाचार पत्रों ने ग्रामीण और शहरी समाज के बीच वैचारिक संवाद स्थापित किया तथा राष्ट्रीय आंदोलन को जन-आधारित स्वरूप प्रदान किया। यही कारण है कि झारखंड के स्वतंत्रता आंदोलन में स्थानीय प्रेस को एक सशक्त वैचारिक शक्ति के रूप में देखा जाता है।

झारखंड के स्थानीय समाचार पत्रों का सबसे अधिक प्रभाव युवाओं और विद्यार्थियों पर पड़ा। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में शिक्षित युवा वर्ग राष्ट्रीय आंदोलन का प्रमुख आधार बनकर उभरा। समाचार पत्रों के माध्यम से उन्हें राष्ट्रीय नेताओं के विचारों, स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाओं तथा ब्रिटिश शासन की नीतियों की जानकारी प्राप्त होती थी। 'आर्यावर्त', 'देश' और अन्य राष्ट्रवादी समाचार पत्रों में प्रकाशित लेख, कविताएँ और संपादकीय युवाओं में देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना उत्पन्न करते थे। विद्यार्थियों को विदेशी शिक्षा प्रणाली और औपनिवेशिक मानसिकता के विरुद्ध जागरूक किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा और स्वदेशी संस्थानों के समर्थन का व्यापक प्रचार किया गया। असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अनेक विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार किया और राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी की। स्थानीय प्रेस ने इन गतिविधियों को प्रमुखता से प्रकाशित कर युवाओं को आंदोलन से जोड़ने का कार्य किया। समाचार पत्रों ने युवाओं को केवल राजनीतिक रूप से जागरूक नहीं किया, बल्कि उनमें सामाजिक जिम्मेदारी और राष्ट्र निर्माण की भावना भी विकसित की। यही युवा आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ता और नेतृत्वकर्ता बने।झारखंड मुख्यतः कृषि प्रधान प्रदेश था, इसलिए किसानों और मजदूरों की समस्याएँ स्वतंत्रता आंदोलन का महत्वपूर्ण हिस्सा थीं। स्थानीय समाचार पत्रों ने किसानों और मजदूरों की कठिनाइयों को उजागर करते हुए उनके अधिकारों की आवाज़ बुलंद की। समाचार पत्रों में जमींदारी शोषण, अत्यधिक लगान, नील की खेती और किसानों पर होने वाले अत्याचारों से संबंधित समाचार प्रकाशित किए जाते थे। चंपारण सत्याग्रह के दौरान स्थानीय प्रेस ने किसानों की समस्याओं को व्यापक रूप से सामने रखा और महात्मा गांधी के आंदोलन को जनसमर्थन दिलाने में सहायता की।

मजदूर आंदोलनों से संबंधित समाचारों और लेखों के माध्यम से श्रमिक वर्ग को संगठित होने और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा मिली। समाचार पत्रों ने मजदूरों की खराब कार्य परिस्थितियों, कम मजदूरी और औपनिवेशिक शोषण की आलोचना की। स्थानीय प्रेस ने किसानों और मजदूरों को यह समझाने का प्रयास किया कि आर्थिक शोषण का संबंध औपनिवेशिक शासन से है। इस प्रकार समाचार पत्रों ने आर्थिक संघर्षों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़कर स्वतंत्रता संघर्ष को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया।

स्थानीय समाचार पत्रों ने झारखंड की महिलाओं में राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रारम्भिक दौर में महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में भागीदारी सीमित थी, किन्तु राष्ट्रवादी पत्रकारिता ने उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। समाचार पत्रों में महिला शिक्षा, सामाजिक सुधार और महिलाओं की राष्ट्रीय आंदोलनों में भागीदारी से संबंधित लेख प्रकाशित किए जाते थे। इन लेखों ने महिलाओं में आत्मविश्वास और सामाजिक चेतना का विकास किया। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान झारखंड की अनेक महिलाओं ने सभाओं, जुलूसों और बहिष्कार आंदोलनों में भाग लिया। स्थानीय समाचार पत्रों ने महिलाओं की इन गतिविधियों को प्रमुखता से प्रकाशित कर समाज में सकारात्मक संदेश दिया। राष्ट्रवादी प्रेस ने महिलाओं को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग माना। समाचार पत्रों के माध्यम से यह विचार प्रसारित किया गया कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल पुरुषों का नहीं, बल्कि पूरे समाज का संघर्ष है। इससे महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और राष्ट्रीय चेतना को नई दिशा मिली।

झारखंड के स्थानीय समाचार पत्र राष्ट्रीय एकता और जनसंपर्क के प्रभावशाली माध्यम बन गए थे। उन्होंने विभिन्न जातियों, धर्मों और सामाजिक वर्गों के लोगों को एक साझा राष्ट्रीय विचारधारा से जोड़ने का कार्य किया। हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी समाचार पत्रों ने अपने-अपने पाठक वर्ग के बीच राष्ट्रीय आंदोलन के विचारों का प्रचार किया। इन पत्रों ने हिंदू-मुस्लिम एकता, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय सहयोग पर विशेष बल दिया। समाचार पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय नेताओं के विचार, आंदोलन संबंधी सूचनाएँ और राजनीतिक घटनाएँ गाँव-गाँव तक पहुँचती थीं। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षित व्यक्ति समाचार पत्रों को पढ़कर जनता को सुनाते थे, जिससे अशिक्षित लोग भी राष्ट्रीय घटनाओं से परिचित हो पाते थे।

स्थानीय प्रेस ने जनता और नेताओं के बीच संवाद स्थापित किया तथा राष्ट्रीय आंदोलन को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह प्रेस राष्ट्रीय एकता का ऐसा माध्यम बना, जिसने क्षेत्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर पूरे समाज को स्वतंत्रता संघर्ष से जोड़ा। इस प्रकार झारखंड के स्थानीय समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक शक्ति प्रदान करते हुए युवाओं, किसानों, मजदूरों और महिलाओं में राष्ट्रीय चेतना का विकास किया तथा राष्ट्रीय एकता और जनसंपर्क को मजबूत बनाया।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में ऐतिहासिक मूल्यांकन-झारखंड के स्थानीय समाचार पत्रों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जो भूमिका निभाई, उसका प्रभाव केवल औपनिवेशिक काल तक सीमित नहीं रहा, बल्कि स्वतंत्र भारत के लोकतांत्रिक और सामाजिक विकास पर भी गहरा पड़ा। राष्ट्रवादी पत्रकारिता ने जनता में राजनीतिक चेतना, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित की। यही कारण है कि स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में स्थानीय प्रेस को एक महत्वपूर्ण वैचारिक शक्ति के रूप में देखा जाता है।समकालीन परिप्रेक्ष्य में जब मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है, तब स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्थानीय समाचार पत्रों की भूमिका का ऐतिहासिक मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। झारखंड के राष्ट्रवादी समाचार पत्रों ने यह सिद्ध किया कि प्रेस केवल

सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, जन-जागरण और राष्ट्र निर्माण का सशक्त साधन भी हो सकता है। आज के डिजिटल और वैश्विक मीडिया युग में भी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विकसित पत्रकारिता के आदर्श—सत्य, निष्पक्षता, जनहित और राष्ट्रीय प्रतिबद्धता—प्रासंगिक बने हुए हैं। स्थानीय समाचार पत्रों की विरासत आधुनिक पत्रकारिता और इतिहास लेखन दोनों के लिए प्रेरणास्रोत है।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान झारखंड के स्थानीय समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना और लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यही विचारधारा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का आधार बनी। राष्ट्रवादी प्रेस ने जनता को अधिकारों, कर्तव्यों और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के प्रति जागरूक किया। समाचार पत्रों ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय एकता और जनभागीदारी जैसे मूल्यों को मजबूत किया। स्वतंत्र भारत में लोकतंत्र की सफलता के पीछे प्रेस द्वारा विकसित राजनीतिक चेतना का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

स्थानीय समाचार पत्रों की विरासत ने आधुनिक भारतीय पत्रकारिता को भी दिशा प्रदान की। पत्रकारिता को केवल व्यावसायिक गतिविधि न मानकर सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में देखने की परंपरा राष्ट्रवादी प्रेस से ही विकसित हुई। झारखंड के राष्ट्रवादी पत्रकारों का त्याग, साहस और राष्ट्रीय समर्पण आज भी पत्रकारिता के आदर्श माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त, स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान प्रेस द्वारा उठाए गए सामाजिक मुद्दे—जैसे शिक्षा, महिला जागरूकता, किसान अधिकार और सामाजिक समानता—स्वतंत्र भारत के विकास कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण हिस्सा बने। इस प्रकार राष्ट्रवादी प्रेस की विरासत आधुनिक भारत के लोकतांत्रिक और सामाजिक ढाँचे में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

समकालीन मीडिया स्वतंत्रता आंदोलन की ऐतिहासिक स्मृतियों को संरक्षित और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियो और डिजिटल मीडिया के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास तथा राष्ट्रवादी पत्रकारिता की परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुँचाया जा रहा है। झारखंड के स्वतंत्रता आंदोलन और स्थानीय समाचार पत्रों से संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं, नेताओं और पत्रकारों पर आधारित लेख, वृत्तचित्र और विशेष कार्यक्रम समय-समय पर प्रकाशित एवं प्रसारित किए जाते हैं। इससे जनता में ऐतिहासिक चेतना और राष्ट्रीय गौरव की भावना बनी रहती है। आधुनिक मीडिया ने स्वतंत्रता आंदोलन की स्मृतियों को केवल ऐतिहासिक घटनाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे समकालीन मुद्दों से भी जोड़ा है।

हालाँकि वर्तमान समय में मीडिया के व्यवसायीकरण और राजनीतिक प्रभाव को लेकर अनेक प्रश्न उठते हैं, फिर भी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान की राष्ट्रवादी पत्रकारिता आधुनिक मीडिया के लिए नैतिक प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है। झारखंड के स्थानीय प्रेस की ऐतिहासिक भूमिका आज भी पत्रकारिता में जनहित और सामाजिक प्रतिबद्धता के महत्व को रेखांकित करती है।

स्थानीय समाचार पत्र इतिहास लेखन के महत्वपूर्ण स्रोत माने जाते हैं। झारखंड के राष्ट्रवादी समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार, संपादकीय, लेख, विज्ञापन और राजनीतिक टिप्पणियाँ उस समय की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों की सजीव जानकारी प्रदान करती हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास के अध्ययन में स्थानीय समाचार पत्रों का विशेष महत्व इसलिए है क्योंकि वे जनसामान्य की प्रतिक्रियाओं और क्षेत्रीय परिस्थितियों को सामने लाते हैं। सरकारी अभिलेखों में जहाँ औपनिवेशिक दृष्टिकोण दिखाई देता है, वहीं समाचार पत्र जनता की भावनाओं और राष्ट्रवादी विचारधारा को अभिव्यक्त करते हैं। झारखंड के स्थानीय समाचार पत्रों के अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि राष्ट्रीय आंदोलन गाँवों, कस्बों और विभिन्न सामाजिक वर्गों तक किस प्रकार पहुँचा। समाचार पत्रों में प्रकाशित सामग्री सामाजिक परिवर्तन, किसान आंदोलनों, महिला भागीदारी और राजनीतिक जागरूकता के विकास का महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करती है। इतिहासकारों के लिए स्थानीय प्रेस एक ऐसा स्रोत है, जो राष्ट्रीय आंदोलन के क्षेत्रीय स्वरूप और सामाजिक आधार को समझने में सहायक होता है। यही कारण है कि आधुनिक इतिहास लेखन में स्थानीय समाचार पत्रों को अत्यंत मूल्यवान दस्तावेज माना जाता है। इस प्रकार समकालीन परिप्रेक्ष्य में झारखंड के स्थानीय समाचार पत्रों का ऐतिहासिक मूल्यांकन यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने केवल स्वतंत्रता आंदोलन को ही नहीं, बल्कि आधुनिक भारत की लोकतांत्रिक चेतना, पत्रकारिता की परंपरा और इतिहास लेखन को भी गहराई से प्रभावित किया।

निष्कर्ष–"झारखंड में स्थानीय समाचार पत्रों की भूमिका और राष्ट्रवादी चेतना का विकास (1900–1947)" के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्थानीय प्रेस भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली अंग था। झारखंड के समाचार पत्रों ने केवल समाचारों के प्रसार का कार्य नहीं किया, बल्कि उन्होंने राष्ट्रीय चेतना, राजनीतिक जागरूकता और सामाजिक परिवर्तन को व्यापक जन-आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में झारखंड सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों से गुजर रहा था। औपनिवेशिक शासन की दमनकारी नीतियों, जमींदारी शोषण और प्रशासनिक उपेक्षा के कारण जनता में असंतोष बढ़ रहा था। ऐसे समय में स्थानीय समाचार पत्रों ने जनता को संगठित करने और उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का कार्य किया। हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी प्रेस ने अपने-अपने पाठक वर्गों के बीच राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रचार करते हुए स्वतंत्रता संघर्ष को व्यापक आधार प्रदान किया।

'आर्यावर्त', 'सर्चलाइट', 'देश', 'झारखंड बन्धु' तथा अन्य क्षेत्रीय समाचार पत्रों ने ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना करते हुए स्वदेशी, असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलनों को जनसमर्थन दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन समाचार पत्रों ने किसानों, मजदूरों, विद्यार्थियों, महिलाओं और ग्रामीण समाज को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़कर राष्ट्रवादी चेतना का विस्तार किया। स्थानीय प्रेस ने केवल राजनीतिक जागरूकता ही नहीं फैलाई, बल्कि सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक एकता को भी प्रोत्साहित किया। समाचार पत्रों ने हिंदू-मुस्लिम एकता, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय सहयोग की भावना को मजबूत किया। इसके परिणामस्वरूप स्वतंत्रता आंदोलन झारखंड में एक व्यापक सामाजिक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ। इतिहास लेखन की दृष्टि से भी स्थानीय समाचार पत्र अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत हैं। वे उस समय की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का जीवंत चित्र प्रस्तुत करते हैं। झारखंड के राष्ट्रवादी समाचार पत्रों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल राष्ट्रीय नेताओं का संघर्ष नहीं था, बल्कि यह जनसाधारण की सक्रिय भागीदारी और जागरूकता पर आधारित व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन था। अतः यह कहा जा सकता है कि झारखंड के स्थानीय समाचार पत्रों ने राष्ट्रवादी चेतना के विकास, स्वतंत्रता आंदोलन के विस्तार और आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में उनकी भूमिका सदैव स्मरणीय और प्रेरणादायक रहेगी।

****

संदर्भ सूची-:

1. अयोध्या सिंह. *भारत का स्वतंत्रता संग्राम*. पटना: झारखंड हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2005।
2. बिपिन चन्द्र. *आधुनिक भारत का इतिहास*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान , 2010।
3. सुमित सरकार. *आधुनिक भारत*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन2008 ,।
4. रामविलास शर्मा. *भारतीय नवजागरण और हिंदी पत्रकारिता*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन2001 ,।
5. आर.सी. मजुमदार. *भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास*. नई दिल्ली: मैकमिलन इंडिया1998 ,।
6. के.के. दत्त. *झारखंड में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास* .पटना: झारखंड राष्ट्रभाषा परिषद1982 ,।
7. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद. *आत्मकथा*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन2006 ,।
8. मौलाना मजहरुल हक. *चयनित लेख एवं भाषण*. पटना: झारखंड उर्दू अकादमी, 1995।
9. प्रभात कुमार. *झारखंड की पत्रकारिता का इतिहास* .पटना: लोकभारती प्रकाशन, 2012।
10. एन.सी. पंत. *भारतीय प्रेस का इतिहास*. इलाहाबाद: साहित्य भवन2003 ,।
11. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी. *हिंदी पत्रकारिता का इतिहास*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन1997 ,।
12. आर.पी. दुबे. *राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय प्रेस*. नई दिल्ली: ग्रंथ शिल्पी2004 ,।
13. शिवपूजन सहाय. *झारखंड का साहित्यिक और पत्रकारिता आंदोलन* .पटना: झारखंड हिंदी ग्रंथ अकादमी1990 ,।
14. बी. पट्टाभि सीतारमैया. *भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास*. नई दिल्ली: सस्ता साहित्य मंडल2001 ,।
15. ताराचंद. *भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास*. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार1985 ,।
16. राधाकृष्ण चौधरी. *झारखंड का आधुनिक इतिहास* .पटना: जानकी प्रकाशन , 1999।
17. एस. गोपाल. *आधुनिक भारत का निर्माण*. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट2007 ,।
18. ए.आर. देसाई. *भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि*. नई दिल्ली: मैकमिलन, 2002।
19. एम.एन. दास. *भारत में पत्रकारिता और स्वतंत्रता आंदोलन*. कोलकाता: प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स1996 ,।
20. रामचन्द्र गुहा. *गांधी के बाद भारत*. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स2011 ,।